14वां दीक्षांत समारोह

8 सितम्बर, 2017

विश्वविद्यालय प्रतिवेदन

प्रो. अशोक कुमार सरयाल

Ph.D. (Genetics), Gold Medalist, IARI

कुलपति

चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय
पालमपुर - 176062 (हि.प्र.)

विश्वविद्यालय प्रतिवेदन
(8 सितम्बर, 2017)

प्रो. अशोक कुमार सरयाल
Ph.D. (Genetics), Gold Medalist, IARI
कुलपति

हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल एवम् चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, आचार्य देवव्रत जी, इस प्रतिष्ठित समारोह के मुख्य अतिथि श्री बृज बिहारी लाल बुटेल जी, माननीय अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विधानसभा, माननीय मन्त्रीगण, हिमाचल प्रदेश विधानसभा के सदस्यगण, अभिषद (सीनेट), प्रबन्धन परिषद् व अकादमिक (शैक्षणिक) परिषद् के माननीय सदस्यगण, आमन्त्रित महानुभाव, संविधिक अधिकारी, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्यगण, कर्मचारीगण, उपाधि प्राप्तकर्ता व उनके अभिभावक, छात्र एवम् छात्राएँ, मीडिया के प्रतिनिधि, देवियो व सज्जनो, मैं 14वें दीक्षांत समारोह के शुभ अवसर पर आप सबका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। सर्वप्रथम, मैं उन सभी विद्यार्थियों को जिन्होंने सफलतापूर्वक अपनी शिक्षा को विद्या के इस पावन मन्दिर में पूर्ण किया है, आज के शुभ अवसर पर विश्वविद्यालय की उपाधि योग्य बनने पर बधाई देता हूँ ।

हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल व इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति आचार्य देवव्रत जी की गरिमामयी उपस्थिति से हम सब अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं, जिन्होंने विश्वविद्यालय के 14वें दीक्षांत समारोह के शुभ अवसर पर हमारे बीच शामिल होने की कृपा की है। आप एक जाने–माने संस्कृत के विद्वान और योग के प्रतिपादक भी हैं। आपका यह मानना है, कि आज के इस भौतिक युग में विद्यार्थियों को मूल्य आधारित आधुनिक शिक्षा दी जानी चाहिए जो विज्ञान एवं तकनीकी पर आधारित हो। मैं आज बहुत ही गर्व अनुभव कर रहा हूँ कि इस दीक्षांत समारोह में माननीय अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विधान सभा, श्री बृज बिहारी लाल बुटेल जी, जो हमारे बीच पधारे हैं, कृषि विश्वविद्यालय के हमेशा से मार्गदर्शक व प्ररेणा के स्त्रोत रहे हैं। मैं विश्वविद्यालय परिवार की तरफ से आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। मान्यवर, हिमाचल प्रदेश सरकार के कुशल नेतृत्व में प्रदेश में कृषि अनुसन्धान, प्रसार और शिक्षा के आधुनिकीकरण को नई दिशा मिली है। खाद्यान्न उत्पादन में हिमाचल प्रदेश को भारत सरकार के कृषि कर्मण पुरस्कार से तीसरी बार पुरस्कृत करना हिमाचल प्रदेश सरकार के कुशल नेतृत्व का ही परिणाम है। यह मेरे लिए बहुत ही गौरवमयी दिन है कि मैं इस विश्वविद्यालय का एक भूतपूर्व छात्र,

अब कुलपति के रूप में 14वें दीक्षांत समारोह के इस सुअवसर पर आप सब को संवोधित कर रहा हूँ। मेरे लिए आज का दिन बहुत ही सौभाग्यशाली है कि मैं आपके समक्ष विश्वविद्यालय का संक्षिप्त प्रगति विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना 1 नवम्बर 1978 को हुई थी। विश्वविद्यालय के तीन मुख्य कार्यक्षेत्र हैं। कृषि व सम्बन्धित विषयों में शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कृषि एवं सम्बन्धित विषयों में शोध व प्रसार कार्य करने का दायित्व विश्वविद्यालय को सौंपा गया है। कृषि विश्वविद्यालय में इन दायित्वों का निर्वहन करने हेतु चार संगठक महाविद्यालय व एक अनुसन्धान एवं एक प्रसार शिक्षा निदेशालय कार्यरत हैं। महाविद्यालय 6 स्नातक स्तर के, 22 स्नातकोत्तर एवं 15 विद्यावाचस्पति उपाधि कार्यक्रम संचालित करते हैं। विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक 6593 विद्यार्थी यहां से शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं। विश्वविद्यालय के अधिकांश शिक्षार्थी हिमाचल प्रदेश सरकार के कृषि, पशुपालन एवं बागवानी विभागों में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त प्रदेश, देश एवं विदेश के विभिन्न विभागों में प्रशासनिक, वैज्ञानिक, प्राध्यापक एवं अन्य पदों पर कार्यरत रहे हैं।

वर्ष 2015-16 और 2016-17 शैक्षणिक सत्र बहुत ही महत्वपूर्ण रहे हैं। 14वें दीक्षांत समारोह में वर्ष 2015-16 के कुल 343 छात्रों को उपाधि से सम्मानित किया जा रहा है, जिसमें से 19 विद्यार्थी विद्यावाचस्पति (पी.एच. डी.) की उपाधि से अलंकृत होगें, 97 विद्यार्थी स्नातकोत्तर एवं 227 विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त करेंगे। छात्रों में परस्पर प्रतिभा को बढ़ावा देने हेतु सर्वश्रेष्ठ 7 प्रतिभाशाली छात्रों को स्वर्णपदक के लिए चुना गया है, जिनमें कुमारी दीपाली, बी.एस.सी. (ऑनर्स) कृषि; कुमारी सोनाली मिश्रा, बी.वी.एस.सी. एण्ड ए.एच.; कुमारी आंचल परमार, बी.एस.सी. (ऑनर्स) गृह विज्ञान; कुमारी सुष्मिता शर्मा, बी.एस.सी. (अतिथ्य एवं होटल प्रबन्धन), कुमारी पलक, बी.टेक. (खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी); कुमारी शालिनी जरियाल, बी.एस.सी., श्री गौरव (स्नातकोत्तर कार्यक्रम) और कुमारी शैलजा बिन्द्रा (विद्यावाचस्पति कार्यक्रम) ने अपने-अपने शैक्षणिक कार्यक्रम में सर्वाधिक अंक (ओ.जी.पी.ए.) प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। मैं इन सभी स्वर्ण पदक विजेताओं को बधाई देता हूं।

वर्ष 2017-18 के शैक्षणिक सत्र के लिए सर्वाधिक 13613 विद्यार्थियों ने पशु-चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय तथा कृषि महाविद्यालय में प्रवेश के लिए निर्धारित 137 सीटों के लिए आवेदन किया था। जो पिछले शैक्षणिक सत्र 2016-17 की तुलना में 1,113 अधिक है। इससे पता चलता है कि वर्तमान समय में पशु-चिकित्सा एवं पशु विज्ञान व कृषि की शिक्षा का छात्रों में कितना महत्व है। सभागार में उपस्थित सम्माननीय अतिथियों को यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष विश्वविद्यालय के कुल 191 छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता अर्जित की है। जिसमें 61 छात्रों ने राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा, जोकि भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा आयोजित की जाती है, उसमें सफलता हासिल की है। कृषि वैज्ञानिक

चयन परीक्षा को 20 छात्रों ने उतीर्ण किया है, 21 छात्रों ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (भा.कृ.अ.प.) की वरिष्ठ छात्रवृत्ति (SRF) व 72 छात्रों ने कनिष्ठ छात्रवृत्ति (JRF) परीक्षा में सफलता अर्जित की है, 17 छात्रों ने भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की इन्सपायर छात्रवृत्ति व अन्य छात्रवृत्तियां प्राप्त की हैं। विश्वविद्यालय के 39 वर्षों के इतिहास में छात्रों द्वारा भारी संख्या में अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिता परिक्षाओं में सफलता प्राप्त करने का यह पहला कीर्तिमान है। महामहिम राज्यपाल जी ने भी ऐसे कीर्तिमान स्थापित करने पर कुलपति को बधाई देते हुए समस्त विश्वविद्यालय की सराहना की है। भा.कृ.अ.प. के उप महानिदेशक (शिक्षा), डा. एन.एस. राठौर ने भी विश्वविद्यालय की इस उल्लेखनीय उपलब्धि की प्रशंसा की। यह सब विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों और छात्रों के कठिन मेहनत एवं परिश्रम के कारण सम्भव हुआ जिसके लिए विश्वविद्यालय के कुलपति ने नव वर्ष पर ''कार्य सम्मान, मेहनत एवं कार्य संस्कृति'' अपनाने का संकल्प दिलाया था। इस संकल्प की सिद्धि के लिए विश्वविद्यालय में कार्यरत मानव संसाधन विकास एवं नियोजन केन्द्र ने छात्रों को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने के लिए तैयारी करवाने हेतु अलग से छात्रों के लिए कोचिंग की कक्षाओं का प्रबन्ध किया जिससे हमारे छात्र राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा में अधिक से अधिक सफलता प्राप्त कर सकें। इस केन्द्र में 200 से अधिक छात्रों ने प्रतियोगिता परीक्षा, व्यवहार कुशलता व व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया।

विश्वविद्यालय का प्रयास रहता है कि अपने विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास के लिए राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC), राष्ट्रीय समाज सेवा (NSS), खेल-कूद व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए समुचित सुविधा व वातावरण उपलब्ध करवायें। यह हमारे शैक्षणिक कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। विश्वविद्यालय के प्रथम व द्वितीय वर्ष के सभी छात्रों के लिए एन.सी.सी. / एन.एस.एस. अनिवार्य कार्यक्रम हैं।

गत वर्ष विभिन्न महाविद्यालयों के 18 छात्रों को सफलता पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त एन.सी.सी. ''बी'' प्रमाण पत्र तथा 13 छात्रों को एन.सी.सी. ''सी'' प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया है। अखिल भारतीय कृषि विश्वविद्यालय अन्तर खेल-कूद प्रतियोगिता में हमारे विश्वविद्यालय की महिला वास्किट बॉल टीम ने चौधरी चरण सिहं कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा में भाग लेकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया जिसके लिए मैं महिला वास्किट बॉल टीम की कप्तान कुमारी अंजलि एवं टीम की अन्य खिलाड़ियों को बधाई देता हूं।

महोदय, मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि विश्वविद्यालय ने प्रसार शिक्षा कार्यक्षेत्र में सतलुज जल विद्युत निगम के साथ एक समझौता किया है जिसके अन्तर्गत 52 प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, इसमें 1300 किसानों को प्रशिक्षित किया जायेगा। इसके अलावा स्किल कॉन्सिल (व्यवहार परिषद्) भारत के साथ भी समझौता किया गया है जिसमें भी किसानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। आधारभूत विज्ञान महाविद्यालय ने विभिन्न अनुसन्धान और शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए मंगोलिया विश्वविद्यालय और यू.बी.एफ. यूटरसूचुंग (UBF Utersuchungs), जर्मनी से समझौता किया है।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय के ई-संसाधन को आधुनिक स्वरूप दिया गया है जिससे अधिक से अधिक छात्र और अध्यापक उपयोग कर सकें। इसके अन्तर्गत पुस्तकालय द्वारा संस्थानिक भण्डार की व्यवस्था प्रारम्भ की गई है जिसमें 1016 पी.एच.डी. शोधग्रन्थ, 2481 स्नातकोत्तर शोधग्रन्थ एवं 1062 पुस्तकें हिमाचल की गैलरी में ऑनलाइन उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त 1028 पुस्तकें, 145 पत्रिकाएं एवं 19 ई-बुक विश्वविद्यालय द्वारा खरीदी गई हैं।

डा. पी.के. मेहता के नेत्रृत्व में वैज्ञानिकों के एक समूह को बेलवाली सब्जियों में फल मक्खी प्रबन्धन के लिए नरकीट विनाषक तकनीकी आधारित ''पालम ट्रैप'' विकसित करने हेतु हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा नवोन्वेशी पुरस्कार (Innovation Award) से सम्मानित किया गया है। उद्यान विभाग की पौधशाला को राष्ट्रीय उद्यान परिषद् द्वारा चार सितारा पौधशाला का प्रमाण-पत्र प्राप्त हुआ है। भा.कृ.अ.प. द्वारा विश्वविद्यालय के खरपतवार नियन्त्रण परियोजना को सर्वश्रेष्ठ केन्द्र का दर्जा प्रदान किया गया है । महोदय, मैं यहां यह बताना चाहता हूं कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और स्नातक छात्रों ने अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर 26 पुरस्कार प्राप्त किए हैं। विश्वविद्यालय के 5 वैज्ञानिक अपने विषय विशेषज्ञ क्षेत्रों में उच्च प्रशिक्षण ग्रहण करने के लिए विदेश गए। वर्ष 2016-17 में विश्वविद्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर की 10 से अधिक कार्यशालायें, नवीकरण पाठ्यक्रम एवं सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया।

कृषि महाविद्यालय ने 2016 में अपना स्वर्ण जयन्ती वर्ष मनाया, जिसके अन्तर्गत महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से महिला कृषि दिवस, जल दिवस, मृदा स्वस्थ्य दिवस और इसके साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों के देश व विदेश के सम्मान्नित वैज्ञानिकों के व्याख्यान करवाये गये। कृषि महाविद्यालय गुणात्मक अनुसन्धान में निरन्तर तेजी से आगे बढ़ रहा है। कृषि महाविद्यालय के फसल सुधार विभाग की उच्च तकनीकी आणविक कोशिका जनन प्रकरण एवं उत्तक संवर्धन प्रयोगशाला द्वारा पांच नवीन दोगुणी अगुणित (Double Haploid) प्रजनन विज्ञप्ति विकसित करने में अग्रसर है तथा ब्रैड गेहूं , डयूरम गेहूं और अन्य फसलों के पूर्व प्रजनन प्रयासों की यथार्थता और क्षमता को परिवर्धित करने के लिए जीन का समूह यथावत संकरण तथा प्रतिदीप्त यथावत संकरण सुविधा की स्थापना की गई है। दोगुणी अगुणित प्रजनन विज्ञप्ति कर नवीन गुणसूत्र निष्कासन (New Chromosome elimination) तकनीकी का प्रयोग करके देश की प्रथम दोगुणी अगुणित गेहूं की उन्नत किस्म "हिम प्रथम" का निस्तार (संस्तुति) किया गया है। बीज विज्ञान विभाग द्वारा मक्का के आठ संकर किस्मों की अनुवांशिकी शुद्धता तथा गेहूं की सात किस्मों में एस.एस.आर. मारकर तथा उनकी फिंगर प्रिटिंग और मक्का के 142 स्थानीय किस्मों का भी फिंगर प्रिटिंग करके एक डाटावेस तैयार किया जा रहा है। संकर किस्मों के विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत बन्दगोभी के तीन कोशिका द्रव्य नर नपुसंक (CMS) लाईनें तथा सात फूलगोभी की लाईनें विकसित की गई हैं।

कृषि के क्षेत्र में मानव श्रम दक्षता को बढ़ाने हेतु कृषि अभियान्त्रिक विभाग द्वारा ऐसे कृषि उपकरणों को

बनाया गया है जिसमें श्रम कम लगे और कार्य अधिक हो सके। इन यन्त्रों को किसानों में लोकप्रिय बनाने हेतु किसानों के खेत पर प्रदर्शन लगाकर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रदेश के किसानों को संरक्षित खेती को अपनाने हेतु बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय में 50 प्राकृतिक हवादार आधुनिक सुविधाओं से युक्त पॉली हाऊस का निर्माण किया गया है जिसकी सहायता से उत्पादन एवं सरंक्षण तकनीकी को किसानों तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। अभी हाल ही में विश्वविद्यालय के सब्जी उत्पादन प्रक्षेत्र पर एक अत्यन्त आधुनिक रोबोटिक्स कलम (ग्राफ्टिंग) मशीन की स्थापना की गई है। जिससे प्रदेश के किसानों को उच्चगुणवत्ता पूर्ण कलम (ग्राफ्टिंग) किए पौधे उपलब्ध करवाए जाएंगे। आमतौर पर सब्जियों में प्रयोग होने वाले कीटनाशकों के प्रयोग के लिए समय निर्धारण हेतु एक मूललिपि (Protocal) तैयार की गई है। गेहूं की फसल में पीला रतुआ बीमारी के नियन्त्रण हेतु एक मूल लिपि के साथ रोग प्रतिरोधी किस्मों की बिजाई की संतुति की गई है।

शून्य लागत परम्परागत खेती को बढ़ावा देने के लिए 27–30 अप्रैल 2016 को राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी स्वयं मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। जैविक विभाग द्वारा गेहूं , वक व्हीट (कूट), मसूर और चना की फसलों पर शून्य लागत खेती का मूल्यांकन किया गया, जिसका परिणाम उत्साह जनक प्राप्त हुआ है। शून्य लागत खेती को स्नातकोत्तर एवं अनुसन्धान से जोड़ा जा रहा है।

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय में अत्याधुनिक एक बहुआयामी और किसान क्षमता केन्द्र है जिसमें विश्व स्तरीय सुविधा उपलब्ध है। यह एक निर्दिष्ट (Referred) अस्पताल राज्य के पशुओं के उपचार हेतु कार्य कर रहा है। पिछले दो वर्षों में कुल 13319 निर्दिष्ट बीमार पशुओं का उपचार सफलतापूर्वक किया गया। राज्य एवं जनजातीय क्षेत्रों में कुल 46 नैदानिक (Diagnostic) शिविरों की सहायता से 1117 पशुओं का उनके स्थान पर ही निदान एवं उपचार किया गया है। महाविद्यालय द्वारा पशु बांझपन पर 166 निदान एवं उपचार शिविर राज्य के विभिन्न जिलों में लगाए गए जिनमें 40 शिविर जनजातीय एवं दूरदराज के क्षेत्रों में आयोजित किये गए। महाविद्यालय में अब तक 31 पुन चर्या (Refresher Course) प्रशिक्षण के माध्यम से 729 पशु फार्मासिस्टों को प्रशिक्षित किया गया है।

किसानों व छात्रों को आधुनिक पशु प्रबन्धन के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध करवाने हेतु 83 शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें 2009 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। आपदा काल में महाविद्यालय द्वारा पशु आपदा प्रबन्धन के लिए एक खण्ड पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भारत के समस्त भागों से आये हुए 29 राष्ट्रीय आपदा बचाव दल एवं 44 छात्रों को प्रशिक्षत किया गया। पांच घुमन्तू गद्दी समूहों को वैज्ञानिकों ने गोद लिया। उनमें से श्री करम चन्द को राष्ट्रीय पशु अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल ने ''नस्ल बचाव पुरस्कार 2016'' से सम्मानित किया। बकरियों में बर्ष में दो बार प्रजनन करवाने के लिए निम्नतापवीर्य विधि तकनीकी का प्रयोग किया गया। महाविद्यालय ने मुर्गी की ''हिमसमृद्धि'' नाम की एक विशेष प्रजाति विकसित की है जो

पहाड़ी क्षेत्रों में घर के पिछवाड़े पालने के लिए बहुत उपयुक्त पाई गई है। वर्ष 2016-17 में इस प्रजाति के 30,000 चूजों को प्रदेश के 541 मुर्गी पालकों को वितरित किया गया। पशुपोषण विभाग द्वारा राज्य के पशुपालकों और मुर्गी पालकों के लिए गुणवत्ता पूर्ण पशु आहार तथा अन्य आहार तैयार करके बेचा जा रहा है जो महाविद्यालय के लिए एक आय का साधन भी है।

गृह विज्ञान महाविद्यालय शिक्षा, शोध एवं प्रसार के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। वर्तमान समय में महाविद्यालय में स्नातक गृह विज्ञान/सामुदायिक विज्ञान, स्नातक, वी.टैक (खाद्य विज्ञान एवं तकनीकी) तथा बी. एस.सी. (अतिथ्य एवं होटल प्रबन्धन/प्रशासन) की कक्षाएं सुचारू रूप से चलाई जा रही हैं। व्यावसायिक कुशलता को बढ़ावा देने के लिए महाविद्यालय में स्नातक स्तर के छात्रों के लिए अनुभावनात्मक शिक्षा के लिए एक इकाई की स्थापना की गई है जिसकी सहायता से छात्रों को स्वरोजगार के लिए तैयार किया जाता है। हाल ही में पूरे देश में गृह विज्ञान के पाठ्यक्रम में व्यापक रूप से संशोधित किया गया है, जिसका नाम गृह विज्ञान से बदल कर सामुदायिक (कम्यूनिटी) विज्ञान किया गया है, ताकि छात्रों में स्वरोजगार हेतु अनुभवनात्मक व्यवहार, व्यावसायिक कार्यकुशलता एवं निजी क्षेत्र या अन्य गैर-सरकारी संस्थानों में कार्य करने की क्षमता विकसित हो सके। अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना एवं विभिन्न शोध परियोजनाओं के अन्तर्गत पर्वतीय किसान महिलाएं एवं स्थानीय शिल्पकारों हेतु विभिन्न तकनीकों को विकसित किया गया है जिसमें मुख्यत: उपलब्ध अनाज, दालें, फल सब्जियां एवं रेशों का मूल्यवर्धन, कपड़ों की रंगाई हेतु प्राकृतिक रंग तथा महिलाओं में थकान कम करने हेतु कृषि यन्त्र एवं कार्यात्मक कपड़े हैं। पहाड़ी महिलाओं में कार्य कुशलता बढ़ाने हेतु उनकी आवश्यकतानुसार व्यवहार कुशलता प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। प्रदेश के आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए आंगनबाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र भी चलाया जा रहा है। आधारभूत विज्ञान महाविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान सप्ताह का फरवरी के अन्तिम सप्ताह में आयोजन किया गया।

शोध निदेशालय कृषि, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान, गृह विज्ञान व आधारभूत विज्ञान के क्षेत्र में शोध के लिए समन्वय स्थापित करता है। यह स्थान विशेष, आवश्यकता एवं समस्या आधारित अनुसन्धान को बहुआयामी पद्धति के साथ प्रदेश भर में स्थित तीन क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्रों (धौलाकुआं, बजौरा व कुकुमसेरी) एवं 10 अनुसन्धान उपकेन्द्रों (अकरोट, बरठीं, सुन्दरनगर, कांगड़ा, मलां, नगरोटा, सलूणी, सांगला, लियो व लरी) जो प्रदेश के विभिन्न कृषि भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित हैं, में शोध कार्यों को संचालित करता है। वर्तमान में निदेशालय में 40 शोध परियोजनाएं 794.77 लाख रूपये की लागत से कार्यान्वित हैं। इन परियोजनाओं की वित्तिय राशी भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना व अन्य निजी कम्पनियों द्वारा उपलब्ध कराई गई हैं। इसके अतिरिक्त 31367.90 लाख रूपये की 154 शोध परियोजनाऐं वितिय स्वीकृति हेतु विभिन्न संस्थाओं को भेजी गई हैं। गत वर्ष

विश्वविद्यालय की धान, तिलहनी, दलहनी व सब्जियों की 11 नई उन्नत किस्मों का अनुमोदन किया गया तथा 10 नई तकनीकों को खरीफ व रबी फसलों की सम्पूर्ण सिफारिशों में शामिल किया गया है। शोध में गुणवत्ता बढ़ाने हेतु विश्वविद्यालय में पहली बार विभाग एवं शोध निदेशालय स्तर पर शोध समितियों का गठन किया गया। कुलपति की अध्यक्षता में स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के शोध प्रारूप (Thesis Synopsis)का मूल्यांकन कर स्वीकृति प्रदान की जा रही है।

प्रसार शिक्षा निदेशालय विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर, परिपालन करने एवं विभिन्न प्रसार कार्यों को सुनियोजित तरीके से क्रियान्वित करने का सफल प्रयास करता है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई तकनीकों को किसान के खेतों तक पहुंचाना एवं कृषकों से नियमित सम्पर्क बनाये रखना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है। इस प्रतिवेदन की अवधि के दौरान प्रसार निदेशालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 880 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए, जिससे लगभग 29260 किसान लाभान्वित हुए, 1786 किसानों को दूरभाष के माध्यम से सलाह दी गई, 71 किसान गोष्ठीयां आयोजित की गईं, 34 प्रक्षेत्र दिवस मनाए गये तथा 79 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं 41 प्रक्षेत्र परीक्षण किये गए। कृषि सम्बन्धित समस्यों के निवारण हेतु लगभग 8267 किसान विश्वविद्यालय व कृषि विज्ञान केन्द्रों में पधारे। इसके अतिरिक्त 69 किसान सचल सलाह सेवाएं प्रदान की गईं जिसका लाभ लगभग 24,57,143 किसानों ने उठाया। विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों में 13 वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठकें आयोजित की गयीं। खरीफ एवं रवी फसलों के लिए कृषि अधिकारी कार्यशाला एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों की क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। मेरा गांव-मेरा गौरव तथा प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं। प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों में पौध किस्म संरक्षण व किसान अधिकार अधिनियम-2001 पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रसार निदेशालय जलवायु स्थिति स्थापक कृषि पर राष्ट्रीय पहल की परियोजना दो कृषि विज्ञान केन्द्रों हमीरपुर व कुल्लू में चलाई जा रही हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्तपोषित 50.30 लाख रूपये की एक परियोजना कांगड़ा जिले के खेती करने वाले परिवारों की सुरक्षित आजिविका में वृद्धि हेतु उन्नत कृषि उत्पादन कार्यान्वित की गई है। प्रधानमंत्री के नव भारत निर्माण कार्यक्रम संकल्प से सिद्धि के अन्तर्गत आगामी पांच वर्षों में किसानों की आय को दोगुना करने हेतु ''एकीकृत कृषि प्रणाली'' अपनाने के लिए पहाड़ी एवं पर्वतीय क्षेत्रों के लिए मॉडल दस्तावेज तैयार किया गया।

हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल व विश्वविद्यालय के कुलाधिपति आचार्य देवव्रत जी, सम्माननीय मुख्य अतिथि श्री बृज बिहारी लाल बुटेल जी, माननीय अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विधान सभा व प्रतिष्ठित मेहमानों को मैं बताना चाहता हूं कि यह हमारे प्रमुख कार्यक्रमों व उपलब्धियों का विभिन्न क्षेत्रों का संक्षेप वर्णन है। इन सभी उपलब्धियों का श्रेय विश्वविद्यालय के समर्पित अध्यापकों, मेहनती व अनुशासित विद्यार्थियों व गैर-शिक्षक कर्मचारियों को जाता है। मैं यहां इस शुभ अवसर पर पुनः कुलाधिपति व महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी,

माननीय अध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश विधान सभा श्री बृज बिहारी लाल बुटेल जी का हृदय से स्वागत करता हूं जिन्होंने इस दीक्षांत समारोह में पधार कर हम सबको गौरवान्वित किया।

अन्त में, मैं, सभागार में उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त करता हूं। विशेष तौर पर गौरवान्वित माता-पिता, परिवार तथा उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने अपनी कठिन मेहनत, लगन और स्वावलम्बन के बल पर उस फल को प्राप्त किया है जो उन्होंने एक स्वप्न के रूप में देखा था। आपके विद्यार्थी जीवन में मेहनत से प्राप्त सफलता, एक मील का पत्थर है जो भविष्य में ऐसी सफलताओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहेगा। भगवान आपको स्वास्थ्य और प्रसन्नता प्रदान करे।

धन्यवाद !

जय हिन्द !

'भारत माता की जय !

14th CONVOCATION

8th SEPTEMBER, 2017

UNIVERSITY REPORT

Prof. Ashok Kumar Sarial

Ph.D. (Genetics), Gold Medalist, IARI

Vice-Chancellor

Chaudhary Sarwan Kumar Himachal Pradesh Krishi Vishvavidyalya Palampur-176062

UNIVERSITY REPORT

(8th September, 2017)

Prof. Ashok Kumar Sarial
Ph.D. (Genetics), Gold Medalist, IARI
Vice-Chancellor

Acharya Devvrat Ji, His Excellency the Governor of Himachal Pradesh and Chancellor, Chaudhary Sarwan Kumar Himachal Pradesh Krishi Vishvavidyalaya, Palampur; Shri Brij Bihari Lal Butail Ji, the Chief Guest of the day, Hon'ble Speaker Himachal Pradesh Vidhan Sabha, Hon'ble Ministers, Members of the Himachal Pradesh Legislative Assembly; Hon'ble members of the Senate, Board of Management, Academic Council; Invited Dignitaries; Statutory Officers, Heads of the Departments, Faculty and Staff members; Degree Recipients, their Parents; Students; Media friends, Ladies and Gentlemen –I extend my warm welcome you all to the 14th Convocation of this university. At the outset, I congratulate all the Graduates who successfully completed their education at this temple of learning, Chaudhary Sarwan Kumar Krishi Vishvavidyalya and became eligible to receive the Degrees of the University on this auspicious and ceremonial day.

The faculty, staff and students at CSKHPKV feel greatly honoured by the gracious presence of His Excellency, the Governor of Himachal Pradesh and Chancellor of this University, Acharya Devvrat Ji who has very kindly agreed to be with us on this occasion. Acharya Devvrat Ji is an academician and is also a yoga exponent. He is of the strong view that students should be imparted value-based modern education with a strong base of Science and Technology. We proudly welcome our dynamic Hon'ble Speaker, Himachal Pradesh Vidhan Sabha, Shri Brij Bihari Lal Butail Ji, who has always been an inspiring and guiding force for Krishi Vishvavidyalaya has very kindly consented to be the Chief Guest of this occasion. Sir, under the able leadership of Himachal Pradesh Government, Agricultural Education, Research and Extension got a

new direction for its modernization. Govt. of India Krishi Karman Award in food grain production for 3rd time to the State of Himachal Pradesh is due to the able leadership of Government of Himachal Pradesh. It is a great privilege for me, being an alumnus of CSKHPKV, Palampur, to address the august gathering on the occasion of the Fourteenth Convocation of the University as its Vice-Chancellor.

This University was established on 1st November 1978. It has three main mandates- to impart education in Agriculture and other allied branches of learning, conduct research and undertake extension of such technologies to farmers. To fulfil these mandates, the University has four Constituent Colleges, a Directorate of Research and a Directorate of Extension Education. Since its inception, 6593 students have passed out from the University. The technical human resources produced by the university are serving in the State Agriculture, Animal Husbandry and allied departments. Many of the alumni are holding various administrative, scientific, academic and other prestigious positions in the state as well with in & outside the country.

The academic years of 2015-16 and 2016-17 so far has been momentous. I am very happy to share that in all 343 students of academic session 2015-16 will be conferred degrees in this 14th Convocation. Of them 19 are Ph.D., 97 postgraduate and 227 undergraduate. To encourage competitiveness among students, 7 outstanding students have been selected for award of Gold Medals. Ms Deepali, {B.Sc. (Hons) Agriculture}; Ms. Sonali Mishra, (B.V.Sc. & AH); Anchal Parmar, {B.Sc. Home Science (Hons)}; Ms. Sushmita Sharma, (B.Sc Hospitality & Hotel Management); Ms. Palak, {B.Tech. (Food Science & Technology)}; Ms Shalini Jaryal, (B.Sc.); Sh. Gourav of M.Sc. and Ms Shayla Bindra, Ph.D. have obtained highest marks (OGPA) in their respective disciplines. I congratulate them for excellence in academics.

During the Academic year 2017-18, a record number of 13613 candidates applied for B.V.Sc. & AH and B.Sc. (Hons) Agriculture programme for total 137 seats in both the degree programmes. It signifies the importance and popularity of these programmes amongst the students as it is 1113 applicants higher than the last year. It is my pleasure to inform the august audience that during the period under report, 191 students qualified various National level competitive examinations conducted by Indian Council of Agricultural Research (ICAR). Of them 61 students qualified National Eligibility Test (NET), 20 cleared Agricultural Research Service examination, 21 have qualified for SRF

and 72 for Junior Research Fellowship (JRF), 17 students bagged INSPIRE and other Fellowships. This is all time high number of students who have qualified national level competitions since inception of the University. This has been possible due to hard work of teachers and the students for which the Vice-Chancellor has appealed to the University fraternity to adopt new year resolution of "Respect Work, Work Hard & Create Work Culture". His Excellency the Governor of Himachal Pradesh has congratulated the Vice-Chancellor, Faculty members and the students for these achievements. Dr. N.S. Rathore, DDG (Education), ICAR also praised this fete of the University. To prepare students for competitive examinations the Human Resource Development & Placement Centre of the University has initiated coaching classes. A total of 200 students were trained for various competitive examinations and personality development programmes.

We have made conscious efforts to provide quality academic, extracurricular, co-curricular and other requisite facilities to our students. NCC, NSS, sports and cultural programmes are regular features of the academics. NCC/NSS training is mandatory for all the first and second year students of different colleges. During the period under report 18 NCC Cadets got B-certificate and 13 received C-certificates. Our Basketball (Women) team participated in All India Inter Agricultural Universities Sports & Games Meet, held at CCS Haryana, Agricultural University Hisar and won the 2nd position. I congratulate the Captain Ms. Anjali and team members.

The University has signed Memorandum of Understanding (MoU) with Satluj Jal Vidyut Nigam Foundation for organizing 52 Skill development programmes for 1300 farmers. Another MoU was signed between CSK HPKV and Agriculture Skill Council of India. The College of Basic Sciences has established collaboration with Mongolian State University of Agriculture, Mongolia and UBF-Untersuchungs, Germany for various research and teaching activities.

E-Resources Section of the University Library has been strengthened / modernized for the use of students and faculty. The University Library has created an institutional repository of 1016 Ph.D. theses, 2481 M.Sc. theses and 1062 books in Himachal Section which are available on line to the users in digital form. Besides, 1028 books, 145 periodicals and 19 e-books were purchased and added to the University Library.

A group of scientists led by Dr P.K. Mehta got State Innovation Award for developing male annihilation technique based ‘Palam Trap’ for the management of fruit fly in cucurbits in Himachal Pradesh. The National Horticultural Board accredited "Four Star" to nursery raising unit of Horticulture and Agroforestry Department. AICRP on Weed Control operative in the University was felicitated with ICAR Best Performing Centre Award. The enthusiastic faculty and PG students of the University have brought laurels by bagging more than 26 awards at national and international levels. Five faculty members of the University visited abroad to acquire advanced training in their respective fields of specialization as well as to attend different conferences/symposia. Department of Surgery and Radiology organised International conference and workshops on Veterinary Ophthalmology and Small Animal Cardiology. University also organized more than 10 National level workshops, refresher courses, seminars and conferences during the period under report.

The College of Agriculture celebrated its Golden Jubilee year (2016) by organizing various quiz competitions, declamation contests, women’s day in agriculture, water day, soil health day and a series of lectures from eminent national and international personalities. The college is engaged in high quality research and pioneered in developing five innovative double haploid (DH) breeding protocols. The department of Crop Improvement has established Genomic & Fluorescence in situ hybridization facility for acceleration of bread & durum wheat and other crops' pre-breeding endeavours with enhanced precision and efficiency. The wheat variety 'Him Pratham' developed by employing innovative chromosome elimination- mediated technique has been released for cultivation. Department of Seed Science and Technology has ascertained the genetic purity of 8 hybrids, 142 landraces of maize and 7 wheat varieties using DNA fingerprinting. In hybrid breeding programme of vegetable crops, 3 cytoplasmic male sterile lines in cabbage and 7 in cauliflower have been developed.

Various improved farm tools and equipments to reduce fatigue and increase working efficiency were developed and demonstrated in the farmers' field. With the infrastructure of over 50 naturally ventilated polyhouses, the production and protection technologies for raising vegetable crops under protected environment have been developed and are being disseminated to the farmers of the state. Recently, a ‘Robotic Grafting Machine‘ was installed at vegetable research farm to augment production of

quality grafted planting material for the farming community. Also, the safety intervals (waiting periods) for commonly used insecticides in vegetable crops have been established. For the management of yellow rust disease in wheat, the module, comprising use of resistant varieties and application of fungicides, has been developed.

In order to encourage Zero Budget and Natural Farming, a National Workshop was organized on 27-30 April, 2016 in which His Excellency, the Governor of Himachal Pradesh, Acharya Dev Vrat Ji was the Chief Guest. To start with, Department of Organic Agriculture has initiated evaluation of natural farming practices in wheat, buckwheat, lentil and chickpea. The outcome of these findings is encouraging in buckwheat and pulse crops. Natural farming practices have been added to the research programmes of PG students to evaluate their efficacy.

The College of Veterinary & Animal Sciences has Advanced Veterinary Multispecialty and Farmers' Capacity Building Centre which has world class facilities and is a referral hospital of the state for the treatment of the livestock and companion animals. A total of 13319 referred animal patients were treated during the period of report, besides, 46 clinical camps were organized all over the state in which more than 1117 animals were treated on the spot. The college has also organised 166 infertility treatment camps in all parts of Himachal Pradesh, including 40 camps in tribal and remote areas. The College of Veterinary and Animal Sciences trained 729 veterinary pharmacists in 31 refresher courses.

The knowledge of modern scientific practices on animal management was imparted to 2009 farmers and students, through 83 group visits. A block course on animal management during disasters was organised by Veterinary Emergency Response Unit(VERU) in veterinary college. Forty-four (44) students and 29 NDRF personnel from all over the country were trained. Five migratory Gaddi goat flocks were adopted for scientific interventions. Shri Karam Chand, a progressive goat farmer adopted under this project, was awarded "Breed Saviour Award-2016" by ICAR – National Bureau of Animal Genetic Resources , Karnal. An out of season breeding has been made possible by using cryopreserved semen in Gaddi Goats after rigorous standardization protocol. The technology will help farmers to obtain two kidding in a year. The college has developed a new location specific poultry variety "Himsamridhi" suitable for backyard poultry farming in hilly areas. During 2016-17, about 30000 chicks of this stock were

supplied to 541 farmers to establish poultry units including the tribal areas. The department of Animal Nutrition produced 17,500 quintals of quality feed and feed additives for the livestock and poultry owners of the state. It is also the resource to generate the revenue for the College.

The College of Home Science has made rapid growth in terms of teaching, research and extension. Presently college offers B.Sc. (Hons.) Home / Community Science, B Tech in Food Science & Technology and B.Sc. in Hospitality and Hotel Administration. Experiential Learning Units are being run for undergraduate students to promote entrepreneurial skills, confidence building and to prepare students for self-employment in emerging areas. Recently Home Science curriculum in the country has been modified and renamed as Community Science to inculcate entrepreneurial skills for self-employment and increase student's competence to work in private sector. Under various research projects including AICRP on Home Science, College has developed technologies for the hill farmers and local artisans mainly on Processing, value addition and product development of available crops, fruits, vegetables and fibres, natural fabric printing paste, farm tools and functional clothing. College is running one Anganwadi Training Centre to train the Anganwadi workers of the state. The College of Basic Sciences celebrated National Science week in last week of February.

The Directorate of Research of the University coordinates research in the field of Agriculture, Veterinary & Animal Sciences, Home Science and Basic Sciences. It gives emphasis on location-specific, need-based and problem-oriented research with multidisciplinary approach at main campus, three Regional Research Stations (Bajaura, Dhaulakuan & Kukumseri) and ten Research Sub-stations (Akrot, Berthin, Kangra, Sundernagar, Malan, Nagrota, Salooni, Sangla, Leo and Lari) located in different agro-ecological regions of the state. Forty research project proposals on different thematic areas with an outlay of Rs 794.77 lakh have been sanctioned to this University by various funding agencies namely ICAR, DBT, DST, UGC, RKVY, CSIR, Horticulture Mission and some private pharmaceutical and pesticide companies. Besides, 154 research project proposals worth Rs.31367.90 lakh have been submitted to different funding organisations for consideration. During the period under report, the University has developed 11 varieties of cereals, pulses, oilseeds and vegetable crops and released for cultivation. Ten technologies have been incorporated in the Package of Practices for

Kharif and Rabi crops. For improving postgraduate research, the thesis synopsis of all PG students are reviewed under the chairmanship of the Vice-Chancellor.

The Directorate of Extension Education plans, implements and coordinates various extension education programmes of the University. Transfer of technologies to farmers is the top priority of the University. During the period under report, the Directorate of Extension Education and KVKs organized 880 trainings to 29,260 farmers, attended 1786 telephone helplines, organized 71 Kisan Gosthis, 34 Field days, conducted 1027 Diagnostic visits, 41 On Farm Trials, 79 Front line Demonstrations. A total of 8267 Farmers from various parts of Himachal Pradesh visited University Headquarter and KVKs for the technical guidance. Sixty-nine (69) Kisan Mobile Advisory services were provided to 24,57,143 farmers. Thirteen Scientific Advisory Committee Meetings were held at University Krishi Vigyan Kendra. Agricultural Officers Workshop on Kharif and Rabi Crops and Zonal Workshop of KVKs of Zone- I were also organized. Under "Mera Gaon Mera Gaurav" and "Pradhan Mantri Fasal Bima Yozna" various activities like visits to the villages, trainings, Kisan Goshtis and demonstrations are conducted. Training programmes to aware the farmers on Plant Protection Varieties and Farmers Right Act 2001 were conducted. A Project entitled "Transfer of improved farm production technologies for enhancement of rural livelihood security amongst the farm households of Kangra district of Himachal Pradesh" amounting to Rs.50.35 lakh has been sanctioned by ICAR under Krishi Vigyan Kendra scheme of ICAR. Under the Hon'ble Prime Minister's new India programme "Sankalp se Siddhi" to double farmers' income in next five years, a model of Integrated Farming System for hill and mountainous regions has been developed.

His Excellency, the Governor of Himachal Pradesh and Chancellor of CSKHPKV, Hon'ble Chief Guest and distinguished guests, it is a brief account of the activities and achievements in different spheres of the University. The credit for the achievements, whether minuscule or significant, goes equally to our dedicated faculty, its hard working and disciplined students and non-teaching staff. I would like to seize the available opportunity once again to extend a hearty welcome to His Excellency, the Chancellor and Governor of Himachal Pradesh, Acharya Devvrat Ji and Hon'ble Speaker, Himachal Pradesh Vidhan Sabha, and our Chief Guest Shri Brij Bihari Lal Butail Ji for according their top priority to this important occasion.

Finally, I would like to share my immense happiness with all of you, especially the proud parents and families of degree recipients whose consistent encouragement and self support towards their wards have borne the fruits they had anticipated long back. This hard earned success is a major milestone in your career which should trigger much more to add in future. May each one of you scale so high that we never tire of extolling you and bask in your glory.

Thank you

Jai Hind !

"Bharat Mata Ki Jai"